कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 08, (जनवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 01–02

ग्रामीण क्षेत्रो में पशु आवास से संबंधित समस्याएं व उनका समाधान

सरोज भाटी एवं अश्वनी कुमार सिंह
सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: bhatisaru970@gmail.com

देश में नस्ल सुधार तो हुआ है तथा पशु उत्पादों का उत्पादन भी बढ़ा है लेकिन नस्ल सुधार के अनुपात में दूध उत्पादन व पशुओ के उत्पादों का उत्पादन नहीं बढ़ा क्योंकि न तो राज्य सरकार ने, ना हीं, पशुपालन विभाग ने आर्थिक रूप से गरीब अनपढ़, पशुपालक को पशु प्रबंधन विशेष रूप से पशु आवास के महत्व को समझाया, दोनों एजेंसीज इस बात को बताने में विफल रही है की पशु का जितना नस्ल सुधार जरुरी, उससे ज्यादा जरुरी उसका प्रबंधन है, और प्रबंधन में भी पशु पालक आज भी पुरानी विधि से पशु पाल रहा है और आर्थिक रूप से अन्य समाज के व्यक्तियों से पिछड़ रहा है।

इस अध्याय के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रो में पशुओ के आवास के दोष व उनके निवारण पर विशेष ध्यान गया है ताकि पशु तनाव मुक्त रहे, सर्दी, गर्मी व बरसात में रोगग्रसित नहीं हो और अधिकतम उत्पादन दे सके।

(क) ग्रामीण क्षेत्रो में पशुओ की आवास व्यवस्था के दोष–

1. **पशु पालक के पास पर्याप्त भूमि का नहीं होना–**

- जनसंख्या बढ़ने से पीढ़ी दर पीढ़ी भूमि का विभाजन होता चला गया तथा आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण पशुपालक अपनी भूमि बेचता गया जिससे उसके पास इतनी भूमि नहीं बची की वह वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन कर सके ।
- भूमि कम होने से पशुपालक पशुओ के लिए अलग से Milking barn, Calving pen, Isolation Box, Feeding space आदि का निर्माण करवाने में असमर्थ है जिससे पशु बीमार हो जाते है व उनके उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

2. **पशु आवास में हवा के आवागमन का अभाव–**

पशुपालक पशुओ के आवास में उचित हवा के आवागमन का ध्यान नहीं रखता है जिससे पशु आवास में पर्याप्त सूर्य की रोशनी नहीं पहुंच पाती हैं तथा आवास में बहुत नमी बनी रहती है इससे पशुओ को श्वसन संबंधित रोग हो जाते है।

3. **पशु आवास में गंदे पानी के निकास के लिए उचित प्रबंधन का ना होना–**

पशुशाला में गंदे पानी की निकासी के लिए नालियों का अभाव और उचित लम्बाई, गहराई, चौड़ाई व ढलान की नालियों का निर्माण ना करवाया हो जिससे पशु 24 घंटे अपने ही गोबर, मूत्र व गंदगी में खड़ा रहता है व बहुत सारी मौसमी तथा संक्रामक बीमारीओं से ग्रसित हो जाता है ।

4. **ग्रामीण क्षेत्र में स्वच्छ दुग्ध उत्पादन का अभाव–**

ग्वाला दूध दुहते समय बहुत सारी असावधानियाँ रखता है जिससे दूध की गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता है जैसे–

- दूध निकालने की सही पद्धति।
- दूध निकालने से पहले खुद की साफ सफाई का ध्यान,नाखून कटे हुए, सिर व बाल पूरी तरीक से ढके हुए , हाथ धुले हुए।
- थन व अयन को अच्छे से धोये बिना ही दूध निकालना।

- दूध दुहते समय ग्वाले द्वारा नशीली सामग्री का उपयोग करना जिससे दूध की गुणवत्ता खराब होती है।
- दूध के लिए दैनिक उपयोग में आने वाले बर्तनो को अच्छे से साफ नहीं करना जिससे उसमे बहुत प्रकार के सूक्ष्मजीवी पनप जाते है।

5. **पशु आवास का बिना वैज्ञानिक तरीकें से निर्माण–**

- पशुशाला का बिना वैज्ञानिक तरीके से निर्माण करने पर पशु की दैनिकचर्या प्रभावित होती है जिससे पशु का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता व दुग्ध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है इसलिए पशुशाला का निर्माण करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाइये–
- पशुशाला की दीवारें चिकनी होनी चाइये जिससे पशु को चोट ना लगे तथा दीवारे गोबर मूत्र से कम गन्दी हो।
- पशुशाला में फर्श चिकना नहीं होना चाइये क्यूंकि चिकने फर्श पर पशु के फिसलने व चोट ग्रसित होने की संभावना अधिक होती है।
- पशु आवास में उपयुक्त स्थान पर उचित ऊंचाई तथा सही नाप की खेली होनी चाइये।
- पशु आवास में वैज्ञानिक तरीके से नान्द का निर्माण।

6. **पशुशाला में बिजली की उचित व्यवस्था का अभाव–**

- पशु आवास में सभी मशीनरी बिजली से ही चलती है जैसे दूध दोहने की मशीन, सर्दियों में हीटर, गर्मियों में स्प्रिंकलर इत्यादि
- बिजली के अभाव में इन कार्यो को करने में समय व पैसे की लागत अधिक लगती है।

7. **पशु आवास के लिए अच्छी छत का निर्माण –**

आर्थिक रूप से कमजोर पशुपालक पशुशाला की छत को अच्छे तरीके से बनाने में असमर्थ होता है जिससे पशु प्रतिकूल वातावरण अधिक गर्मी सर्दी नमी में रहता है तथा इससे उसकी उत्पादन क्षमता प्रभावित होती है।

(ख) पशु आवास की समस्याओ का निराकरण–

पशुपालक प्रयास कर की पशुशाला का निर्माण वैज्ञानिक तरीके से ही करवाये–

1. उचित स्थान, सही दिशा, अच्छी निर्माण सामग्री का उपयोग।
2. उचित माप व नाप के नान्द तथा पानी पिने की खेली।
3. पर्याप्त उठने बैठने का स्थान पशुओ के लिए तथा उचित फर्श व दीवारों का निर्माण।
4. गंदे पानी के निकास हेतु नाली की व्यवस्था।
5. अन्य सहायक आवासों का निर्माण–
6. गर्भित पशुओ के लिए अलग प्रसव कक्ष छोटे बच्चों के लिए कक्ष।
7. सुखी व गर्भित पशुओ के लिए अलग अलग आवास नर (सांड) को रखने के लिए अलग कक्ष।
8. दाना–चारा उपकरण रखने हेतु उचित भण्डारण आवास।
9. पशु आवास में उचित बिछावन की व्यवस्था।
10. पशुशाला में पशु के उत्पाद दाना–चारा इत्यादि के परिवहन के लिए उचित यांत्रिक साधन।
11. पशुशाला का निर्माण इस तरीके से करवाये जिसमे कम जगह में अधिक पशुओ को रखा जा सके जैसे– Tail to Tail and Head to Head.
12. पशुशाला में काम आने वाले बर्तनो को हर रोज कीटाणुनाशक से धोना जिससे सूक्ष्मजीवी नहीं पनपते है।
13. बीमार पशुओ के लिए अलग कक्ष का निर्माण।
14. पशुशाला में नियमित पर्याप्त व स्वच्छ पानी का उचित प्रबंधन।

पशु पालक यदि उक्त पशुशाला के दोषों का समाधान उक्त बताये अनुसार कर दे तो निश्चित रूप से पशु स्वस्थ रहेंगे तथा उनके उत्पादन में भी बढ़ोतरी होगी जिससे पशु पालक की आर्थिक स्थिति सुधरेगी।